1. 44 वां नेशनल सिस्टम कॉफ्रेंस–2021
2. डी. ई. आई. की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के साथ सहकार्यता
3. नवोन्मेषी प्रासंगिक परियोजनाओं के निर्माणार्थ हांगकांग विश्वविद्यालय के साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान–प्रदान
4. शिक्षक दिवस
5. हिंदी दिवस–२०२१
6. संस्कृत दिवस
7. 'संस्कृत आत्मरक्षा और देवत्व की भाषा है' – पद्मश्री प्रोफेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र
8. आयुष में फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यशाला का आयोजन
9. स्वतंत्रता दिवस
10. १० दिवसीय आई. ई. ई. ई. वर्कशॉप का आयोजन
11. संकाय समाचार

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा (उ. प्र.)

डी.ई.आई. समाचार

जुलाई – सितम्बर 2021
अंक 21

44 वां नेशनल सिस्टम कॉन्फ्रेंस–2021

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया के सहयोग से 22 मई से 23 मई, 2021 तक सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल हेल्थकेयर हैबिटेट्स पर 44वें राष्ट्रीय सिस्टम सम्मेलन (एन.एस.सी–2021) का आयोजन किया। सम्मेलन को आभासी पटल पर सीधे संचार माध्यम द्वारा आयोजित किया गया था। जिसमें दुनिया भर के लगभग 3000 से अधिक प्रतिभागी ई–कैस्केड के माध्यम से जुड़े थे। तीस मौखिक प्रस्तुतियाँ थीं, जिन्हें छह श्रेणियों में विभाजित किया गया था यथा– चेतना और जैविक प्रणाली, शिक्षा प्रणाली, पर्यावरण प्रणाली, स्वास्थ्य सुरक्षा प्रणाली, सूचना और संचार प्रणाली और गणितीय प्रणाली। प्रत्येक श्रेणी में पांच शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। प्रत्येक शोधपत्र के लिए 8–10 मिनट का पूर्व निर्मित वीडियो प्रस्तुत किया गया। जिसके बाद प्रश्नोत्तर के साथ सीधे मौखिक रूप से विचारों का आदान प्रदान किया गया। इसी तरह, दस चयनित पोस्टरों के साथ पोस्टर सत्र को दूसरे दिन 30 मिनट के लिए निर्धारित किया गया था, जहां प्रत्येक पोस्टर का 3 मिनट या उससे कम का एक प्री–रिकॉर्डेड वीडियो प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात् एक ऑडियो इंटरेक्शन किया गया था।

सम्मेलन के पहले दिन सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की वार्षिक आम बैठक भी आयोजित की गई। प्रथम दिवस ही एक संक्षिप्त उद्घाटन सत्र संध्या काल के लिए निर्धारित किया गया था। सत्र की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई और उसके बाद एस.एस.आई. के अध्यक्ष द्वारा सोसायटी का संक्षिप्त परिचय दिया गया। मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रो. एरिक गुडमैन द्वारा एक लघु वीडियो चलाया गया, जिसमें उन्होंने प्रो. हरमन ई. कोएनिंग के साथ अपने लंबे जुड़ाव का उल्लेख किया। ई. कोएनिंग जिन्होंने फिजिकल सिस्टम थ्योरी का बीड़ा उठाया था। यह सुखद विषय है कि प्रो. कोएनिंग ने एम.एस.यू में परम सम्माननीय प्रो. पी.एस. सत्संगी साहब को उनके स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान पढ़ाया था। प्रो. गुडमैन ने एस.एस.आई की स्थापना और उत्थान के लिए परम श्रद्धेय प्रो. पी. एस. सत्संगी साहब को नमन किया। एन.एस.सी.–21 संयोजक ने सम्मेलन का विवरण दिया और डी.ई.आई. का परिचय देते हुए उस पर तैयार की गई लघु फिल्म भी प्रस्तुत की इसके बाद अमेरिका के सैन एंटोनियो में टेक्सास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मो. जमशीदी द्वारा 'कॉम्प्लैक्स सिस्टम ऑफ सिस्टम इंजीनियरिंग पैराडिज़्म फॉर स्मार्ट फ्यूचर सिस्टम्स' और प्रो. इवेंजेलिन सी. अलोसिल्जा, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए द्वारा 'सिस्टम्स फ्रेमवर्क फॉर परसोनलाइज़्ड इनफैक्शियस डिज़ीज़ मैनेजमेंट यूज़िंग नैनो इनैबल्ड बायोसेंसर्स' विषय पर दो महत्त्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। दोनों व्याख्यानों में दर्शकों के साथ महत्त्वपूर्ण बातचीत हुई।

इसके बाद 'व्हाट जेननेक्स्ट थिंक्स' विषय के तहत दुनिया भर के युवा शोधकर्ताओं द्वारा छह आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किये गए। प्रस्तुतकर्ता थे एम.आई.टी, यू.एस.ए. के डॉ. एन. अपूर्व रतन मूर्ति, जिन्होंने द जेननेक्स्ट ऑफ साइंस के बारे में विचारों का आदान–प्रदान किया। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. के डॉ. आरत कालड़ा, ने हैबिट्स एंड हैबिटेट्स कम्पेयरिंग दयालबाग़ एण्ड प्रिंस्टन पर विचार प्रस्तुत किया, जिसमें विभिन्न परिदृश्यों से निपटने में पूर्व और पश्चिम के विपरीत दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया। टीसीएस रिसर्च और डी.ई.आई, भारत के श्री करण नारायण, जिन्होंने फोनन, ग्रैफेन, ग्राफ थ्योरेटिक मॉडलिंग और नैनो ब्रेन सहित कुछ दिलचस्प हालिया शोध प्रयास पर विचार प्रस्तुत किए। डॉ. तन्मय नाथ जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए, ने 'हाइ डायमेंशनल मीडियेशन यूज़िंग डीप लर्निंगः अण्डरस्टैण्डिंग द स्टीम्यूलस पेन रिलेशनशिप इन ह्यूमेंस, अटल इनक्यूबेशन सेंटर–सी.सी.एम.बी, भारत से डॉ.सूरत पर्वतम ने शिफ्ट टुवर्डस ह्यूमन रिलिवेन्ट एण्ड प्रिडिक्टिव पैराडिज़्म फॉर रिसर्च एण्ड ड्रग डिस्कवरी पर एक प्रस्तुति दी। श्री अनुभव

नानावती, पीएच.डी. छात्र कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय यू.एस.ए. इरविन ने बीजगणितीय ज्यामिति, के–थ्योरी और फ्यूचर आउटलुक पर चर्चा की।

सम्मेलन के दूसरे दिन शेष मौखिक प्रस्तुतियाँ पोस्टर प्रस्तुतियों और दो महत्त्वपूर्ण व्याख्यानों के बाद हुईं, प्रथम व्याख्यान 'इमिटेशन लर्निंग फ्रॉम ह्यूमन डिमॉन्स्ट्रेशन' जो प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहरा, आई.आई.टी. कानपुर, भारत द्वारा प्रस्तुत किया गया । दूसरे व्याख्यान 'वेकिंग द फ्रॉगःबिल्डिंग ए रिन्यूब्ड क्लाइमेट कैपिटलिज़्म पर डॉ. टॉम रैंड द्वारा, आर्कटर्न वेंचर्स, कनाडा ने विचार प्रस्तुत किए। सम्मेलन के विषय सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल हेल्थकेयर हैबिटेट्स पर एक पैनल चर्चा भी आयोजित की गई थी जिसमें निम्नलिखित प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल थे– डॉ. अनूप श्रीवास्तव, दयालबाग़, भारत, डॉ. टॉम रैंड, आर्कटर्न वेंचर्स, कनाडा, प्रो. मो. जमशीदी, टेक्सास विश्वविद्यालय सैन एंटोनियो, यू.एस.ए., प्रो. लक्ष्मीधर बेहरा, आई.आई.टी. कानपुर, प्रो. सत्यप्रकाश, दयालबाग़, आगरा, भारत, श्री एम. असद पठान, स्फीहा, भारत और डॉ. अंजू भटनागर, सरन आश्रम अस्पताल, दयालबाग़, आगरा, भारत।

सम्मेलन के एक सत्र में पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया, जहां विभिन्न एस.एस.आई पुरस्कार प्रदान किए गए। सत्र की अध्यक्षता एस.एस.आई. सचिव प्रो. डी. भगवान दास ने की। प्रो. सत्य प्रकाश, डॉ. पी.एस. सुधीश और श्री करण नारायण ने व्यक्तिगत रूप से पुरस्कार प्राप्त किया। जबकि अन्य ने इसे वर्चुअल मोड में प्राप्त किया। पुरस्कारों का विवरण नीचे दिया गया है–

लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड :

1. प्रो. मो जमशीदी, टेक्सास विश्वविद्यालय, सैन एंटोनियो, यूएसए,
2. डॉ. टॉम रैंड, आर्कटर्न वेंचर्स, कनाडा,
3. प्रो. सत्य प्रकाश, दयालबाग़, आगरा, भारत

नेशनल सिस्टम्स गोल्ड मेडल :

1. प्रो. रंजन बोस, निदेशक, आईआईआईटी, दिल्ली

वार्ष्णेय पुरस्कार :

1. डॉ. अरुण गुप्ता, ए.आई.आई.एम.एस., नई दिल्ली
2. प्रो. आदितेश्वर सेठ, आईआईटी, दिल्ली
3. डॉ. प्रेम सेवक सुधीश, दयालबाग, आगरा, भारत

विक्रम पुरस्कार :

1. श्री ए.के. सक्सेना, निदेशक, एडी आरडीई, आगरा
2. श्री करण नारायण, टीसीएस
3. डॉ. सूरत परवतम, अटल इनक्यूबेशन सेंटर, सीसीएमबी

यंग सिस्टम साइंटिस्ट अवार्ड :

1. डॉ. एन. अपूर्व रतन मूर्त्ति, एमआईटी, यूएसए
2. डॉ. आरत कालड़ा, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, यूएसए
3. डॉ तन्मय नाथ, जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी, यूएसए

इस समस्त प्रस्तुतिकरण और आयोजन के साथ दयालबाग़ के विद्यार्थियों के द्वारा लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ ।

सर्वश्रेष्ठ पेपर एवं पोस्टर पुरस्कार श्रेणी

चेतना और जैविक श्रेणी में मानवी जैन सीएम मार्कन। शिक्षा श्रेणी में बिनती सिंह, लोतिका सिंह पर्यावरण श्रेणी में अंकित मित्तल, आत्मेश श्रीवास्तव, स्वास्थ्य सुरक्षा श्रेणी में हिमांशु बंसल, नेहा गुप्ता, प्रो.सुखदेव रॉय, सूचना एवं संचार श्रेणी में रोहन राजू धनक्षीरुर, प्रो. प्रेम कुमार कालड़ा, गणितीय श्रेणी में गुंजन अग्रवाल, श्रुति सिन्हा, पोस्टर प्रस्तुति स्वाति इदानानी, सुरेश इदानानी, स्नेहा इदानानी, पुष्पा इदानानी को पुरस्कृत किया गया।

डी. ई. आई. की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के साथ सहकार्यता

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, प्रकाश लैब, जीव विज्ञान विभाग के सहयोग से एक वृहद् स्तर पर कार्य करने को तैयार है। यह प्रयोगशाला विज्ञान पर आधारित नवाचार जनित जिज्ञासा संचालित करने के लिए प्रसिद्ध है। यह विज्ञान पर आधारित मितव्ययी, लगभग शून्य लागत पर विज्ञान को हर बच्चे तक पहुंचाने की पहल है, जिसे अब आमतौर पर जुगाड़ नवाचार के रूप में जाना जाता है। कोविड–19 की चुनौतियों के प्रत्युत्तर में लैब ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रकाश लैब के सबसे व्यापक रूप से ज्ञात नवाचारों में

से एक पेपर ओरिगेमी माइक्रोस्कोप (फोल्डस्कोप) है । जो कि न केवल दयालबाग़ में बल्कि हर एक ग्रामीण क्षेत्र और आदिवासी इलाकों में डी. ई. आई. स्कूल के छात्रों के लिए उपयोगी है। जो इन छात्रों को न केवल स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के संकाय के साथ अपितु पूर्व छात्र और छात्राओं के साथ बातचीत के लिए लगातार अवसर प्रदान करता है। इन दूरस्थ स्थानों पर युवा आबादी अपने स्वयं के वैज्ञानिक उपकरणों के साथ विज्ञान का अभ्यास करने में सक्षम होने के कारण विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (एसटीईएम) की ओर आकर्षित होते हैं, स्थानीय समस्याओं जैसे कि कृषि और डेयरी आदि में वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करते हैं।

डी. ई. आई. पूरे देश में नियमित फोल्डस्कोप और मितव्ययी नवाचार शिविर भी आयोजित करता है। जहाँ छात्र न केवल अपने निजी पोर्टेबल मितव्ययी सूक्ष्मदर्शी प्राप्त करते हैं,बल्कि वे अपने स्वयं के माइक्रोस्कोप (फोल्डस्कोप) भी निर्मित करते हैं, ताकि मितव्ययी नवाचार की कला को विकसित किया जा सके।

नवोन्मेषी प्रासंगिक परियोजनाओं के निर्माणार्थ हांगकांग विश्वविद्यालय के साथ सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान–प्रदान

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट एशिया में अग्रणी हांगकांग विश्वविद्यालय के साथ एक्सचेंज कार्यक्रम के अंतर्गत संबद्ध हुआ है। कोविड–19 के दौरान हांगकांग की यात्रा में सक्रिय कोविड में अतिरिक्त सावधानी बरतते हुए डी. ई. आई. ने मई–जून 2021 में एक ऑनलाइन एक्सचेंज प्रोग्राम के माध्यम से बड़ी संख्या में छात्रों की भागीदारी को सक्षम करके महामारी को एक अवसर में बदल दिया। दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों ने संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में सामाजिक रूप से प्रासंगिक परियोजनाओं पर काम करने के लिए छोटे समूहों में मिलकर कार्य किया। विनिमय कार्यक्रम के अंत में परियोजनाओं को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया गया और इसके लिये अत्यंत प्रशंसा भी प्राप्त हुई।

डी. ई. आई. और एचकेयू के छात्रों द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत सहयोगी परियोजनाओं के शीर्षक थे – स्मार्ट सिटीज़ एंड ब्लॉकचेन, शिक्षा में लैंगिक रूढ़िवादिता शिक्षा को प्रभावित करने वाली लैंगिक रूढ़ियों का एक अध्ययन और बाल मानसिकता, भारत और हांगकांग चिंता और अवसाद के लक्षणों का प्रबंधन, कोविड–19 एक बहुदृष्टिकोण, महामारी से प्रेरित प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, विकासशील देशों की सामाजिक – आर्थिक स्थिरता और लोक कला के प्रभाव का विविध सांस्कृतिक अध्ययन।

छात्रों का दोनों विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से मार्गदर्शन किया गया।

शिक्षक दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति २०२१ का शिक्षक दिवस पूर्ण जोश और उत्साह के साथ सीधे संचार माध्यम से मनाया गया । कार्यक्रम का आरम्भ विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ किया गया। गुरुजनों के प्रति अपने अतीव सम्मान एवं आदर को प्रदर्शित करते हुए छात्रों द्वारा सुमधुर गुरू वंदना प्रस्तुत की गई । शोधार्थी सदफ इश्तियाक़ द्वारा बहुगुणसम्पन्न शिक्षाविद्, महान दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन और समाज के प्रति उनके अभूतपूर्व योगदान पर प्रकाश डाला गया । डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए छात्रों को उस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया गया । आयोजन हेतु उपस्थित छात्रों ने समस्त दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के अध्यापकों के प्रति अपने भावोद्गारों को प्रस्तुत किया और कोविड–१६ के इस विषम समय में छात्रों के प्रति गुरुजनों के सतत् समर्पण की सराहना करते हुए उनके असाधारण प्रयासों के लिए पूरे डी. ई. आई. शिक्षण समुदाय को धन्यवाद दिया। छात्रों ने डी. ई. आई. में शिक्षक–छात्र संबंध पर प्रकाश डाला और शिक्षण समुदाय को उनकी कड़ी मेहनत, समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए सलाम किया। कुमारी सुरभि सुमन ने अपनी स्वरचित कविता के माध्यम से शिक्षकों का सम्मान किया। इस शुभ दिन पर डी. ई. आई. की दीर्घकालीन समर्पित सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए शिक्षकों, प्रो. रागिनी रॉय, प्रो. पंकज, प्रो. अर्चना कपूर, प्रो. गुरू प्रसाद सत्संगी, प्रो. अश्विनी कुमार शर्मा, और प्रो. सोम प्रकाश को सम्मानित किया गया। इन शिक्षकों ने अपने संबोधन में कहा कि उन्होंने संस्थान से बहुत कुछ सीखा है और संस्थान की सेवा करना जारी रखना चाहेंगे. निदेशक डी.ई.आई. प्रो. पी.के. कालड़ा ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए सेवानिवृत्त शिक्षकों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। कु. सदफ एवं कु. अपरा निहारिका ने कार्यक्रम का संचालन किया और डी. ई. आई. के सभी छात्रों की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया। बड़ी संख्या में कर्मचारियों, छात्रों और कई अन्य लोगों द्वारा इस उत्सव को आभासी पटल पर देखा गया। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गान और राष्ट्रगान के साथ हुआ।

हिंदी दिवस–२०२१

डी. ई. आई. कला संकाय के हिंदी विभाग में दिनांक १४ सितम्बर २०२१ को हिंदी दिवस का आयोजन पूर्ण उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ प्रार्थना से करने के उपरान्त संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष प्रो. शर्मिला सक्सेना ने

हिंदी की रोजगारपरक उपादेयता पर शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के समक्ष अपने मूल्यवान विचार प्रस्तुत किये। हिंदी दिवस पर हिंदी के प्रति अपने लगाव और श्रद्धा को प्रस्तुत करते हुए हिंदी विभाग के शोधार्थियों ने काव्य गोष्ठी के माध्यम से अपने व्यापक सुसंगठित और नवीन मौलिक विचारों और भावनाओं को वाणी दी। तृप्ति त्रिपाठी, विकास, सोनिया, शरद, प्रतिभा, प्रिया वर्मा एवं मोहम्मद अनीस ने अपनी मौलिक काव्य रचनाओं से सभी को प्रभावित किया। काव्य गोष्ठी के उपरान्त भारती, पूनम यादव, आशा ने वर्तमान समय में हिंदी के महत्त्व पर विचार करने के साथ–साथ विश्व पटल पर हिंदी की स्थिति पर भी अपने विचारों को श्रोताओं के सम्मुख रखा। इस अवसर पर हिंदी विभाग के समस्त अध्यापकों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। समस्त संचालन कार्य शोधार्थी दिगंबर सिंह एवं मेघा शर्मा द्वारा किया गया। शोधार्थी तृप्ति, पूनम बघेल, दिगंबर सिंह, मेघा शर्मा ने समस्त कार्यक्रम का आयोजन डॉ. नमस्या एवं डॉ. सुमन शर्मा के नेतृत्व में किया।

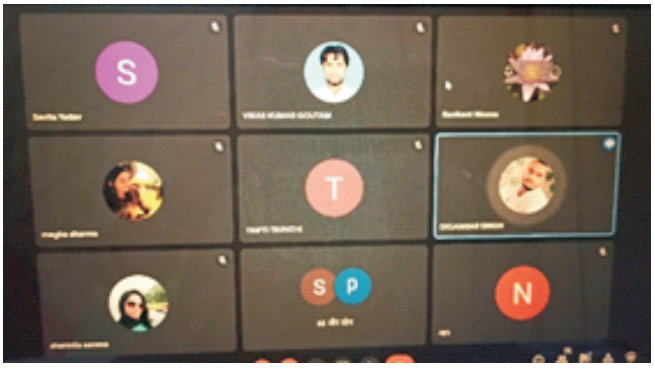

संस्कृत दिवस (साप्ताहिक कार्यक्रम)

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग़ , आगरा में १६ अगस्त २०२१ से २५ अगस्त २०२१ तक संस्कृत विभाग के द्वारा संस्कृत दिवस का साप्ताहिक आयोजन ई. संचार माध्यम से कराया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं को सम्पन्न कराया गया जैसे–श्लोक गायन, निबंध लेखन, संस्कृत गीत गायन ,व्यंग्य लेखन इत्यादि । प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रायें निम्न हैं–

श्लोक गायन प्रतियोगिता प्रथम– राधा (बी.ए.तृतीय वर्ष), द्वितीय–अंजलि (बी.ए.तृतीय वर्ष), तृतीय–स्वाति (बी.ए. तृतीय वर्ष),निबंध लेखन प्रतियोगिता– प्रथम– प्रेरणा (बी.ए. प्रथम वर्ष), द्वितीय–स्वाति (बी.ए.प्रथम वर्ष), तृतीय– तनिशा (बी.ए.प्रथम वर्ष), संस्कृत गीत प्रतियोगिता– प्रथम– राखी (एम.ए.तृतीय वर्ष),
द्वितीय–प्रेरणा (बी.ए.प्रथम वर्ष),तृतीय– रुपाली (बी.ए.प्रथम वर्ष), व्यंग्य लेखन प्रतियोगिता–प्रथम– चित्रा (बी.ए.प्रथम वर्ष),द्वितीय– नीलम (बी.ए.प्रथम वर्ष), तृतीय– तनिशा (बी.ए. प्रथम वर्ष)

'संस्कृत आत्मरक्षा और देवत्व की भाषा है' – पद्मश्री प्रोफेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र

दिनांक 28 एवं 29 अगस्त 2021 को दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ,डीम्ड विश्वविद्यालय, दयालबाग़ ,आगरा एवं ग्लोबल संस्कृत फोरम ,उत्तरप्रदेश प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में आधुनिक संस्कृत काव्य विधा –रचनाधर्मिता एवं युगबोध विषय पर आयोजित द्वि दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ई–शोध संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अध्यक्ष के रूप में उपस्थित पद्मश्री प्रोफेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र, पूर्व कुलपति संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी ने संस्कृत विभाग, डी.ई.आई ,दयालबाग़ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की कि इतने अच्छे विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई है ।उन्होंने कहा कि यदि संपूर्ण भारतवर्ष को जानना चाहते हैं तो संस्कृत पढ़ें, भूगोल जानना चाहते हैं तो पुराण पढ़ें, इतिहास जानना चाहते हैं तो पृथ्वी सूक्त पढ़ें। संस्कृत आत्मज्ञान ,आत्मरक्षा और देवत्व की भाषा है । चौदहवीं शताब्दी में मिस्र के पिरामिड पर संस्कृत शब्दों का काफी प्रतिशत है ऐसा प्रतीत होता है कि ऋग्वेद का सवितृ सूक्त पढ़ रहे हैं ।

मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित प्रो हरिदत्त शर्मा पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, प्रयागराज विश्वविद्यालय ने कहा कि अनेक सहस्त्राब्दियों से अपनी गौरवमयी यात्रा करता हुआ संस्कृत काव्य आज 21वीं सदी तक आया है। संस्कृत काव्यधारा का मूल राष्ट्रभक्ति सर्वाधिक प्रभावी है। आधुनिक संस्कृत रचनाधर्मिता निरंतर संवर्धित होती जा रही है ,जो नितांत नवीन युगबोध के अनुरूप है ।

विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित प्रोफेसर सेन पाठक , अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, ग्लोबल संस्कृत फोरम एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक टेक्सास विश्वविद्यालय यूएसए ने कहा कि आज संस्कृत को विज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता है। हमारे ऋषियों ने अत्यंत प्राचीन काल में इस ज्ञान को खोजा था जिसे आज हम पुनः खोज रहे हैं और यही रिसर्च है । आप 81 वर्ष की आयु में रामायण का अध्ययन कर रहे हैं ।संपूर्ण विश्व में कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में युवा पीढ़ी के वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने में रत आप भारत के कई कैंसर अस्पतालों ,कैंसर अनुसंधान केंद्रों की संबद्धता में मदद कर रहे हैं। संस्कृतानुरागियों के लिए आपके भागीरथी प्रयत्न स्तुत्य हैं। आप अमेरिका में संस्कृत के प्रचार प्रसार में रत हैं। सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रेम

कुमार कालड़ा ने शुभाशीष प्रदान किया । प्रोफेसर उमारानी त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने आधुनिक संस्कृत काव्यविधा रचनाधर्मिता एवं युगबोध विषय को विस्तार से बताया। प्रो० अगम कुलश्रेष्ठ, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग ने स्वागत उद्‌बोधन प्रस्तुत किया।

डॉ. राजेश कुमार मिश्र ,सचिव ग्लोबल संस्कृत फोरम एवं सहायक आचार्य नव नालंदा महाविहार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने धन्यवाद ज्ञापित किया । सत्र का संचालन डॉ. निशीथ गौड़, ने किया।

प्रथम तकनीकी सत्र श्रव्यकाव्य पर आधारित था ,जिसमें अध्यक्ष के रूप में महामहोपाध्याय प्रोफेसर रहस बिहारी द्विवेदी, पूर्व विभागाध्यक्ष ,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश एवं मुख्य वक्ता डॉ. अरविंद तिवारी ,संस्कृत प्रवक्ता ,आदर्श वैदिक कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. तुलसी देवी, विभागाध्यक्ष, महात्मा गांधी पीजी कॉलेज ने दिया और सत्र का संचालन डॉ. अनीता ने किया ।

द्वितीय तकनीकी सत्र गद्यकाव्य पर था जिसमें सत्राध्यक्ष प्रोफेसर मीरा शर्मा, एमेरिटस प्रोफेसर थीं, मुख्य वक्ता प्रोफेसर बनमाली बिस्वाल, निदेशक और विभागाध्यक्ष संस्कृत व्याकरण विभाग, रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग ,उत्तराखंड थे। धन्यवाद डॉ. सी. दुर्गा प्रसाद राव, आंध्र विश्वविद्यालय ने दिया एवं सत्र का संचालन डॉ. प्रदीप ने किया।

तृतीय तकनीकी सत्र दिनांक 29 अगस्त को दृश्यकाव्य पर प्रारंभ हुआ। जिसमें सत्राध्यक्ष प्रो जनार्दन प्रसाद पांडे मणि ,केंद्रीय गंगानाथ परिसर, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रयागराज थे। मुख्य वक्ता डॉ राधाकांत ठाकुर, डीन एकेडमी अफेयर्स ,अध्यक्ष ज्योतिष एवं वास्तु विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश थे। धन्यवाद डॉ. शोभा भारद्वाज, दिया एवं संचालन डॉ. पूजा चौधरी, ने किया ।

चतुर्थ तकनीकी सत्र रचनाधर्मिता के नवीन आयाम में अध्यक्षता डॉ. नवलता, मानित सदस्य, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ एवं मुख्य वक्ता प्रो अगम कुलश्रेष्ठ रहीं। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनीता त्यागी, सह संयोजिका ,ग्लोबल संस्कृत फोरम उत्तर प्रदेश प्रांत ने किया एवं संचालन डॉ.सी. के. शास्त्री अध्यक्ष ,संस्कृत विभाग, ब्रह्मावर्त पीजी कॉलेज, कानपुर ने किया ।

संपूर्ति सत्र में अध्यक्ष के रूप में प्रोफेसर उमापति दीक्षित, उपाध्यक्ष ग्लोबल संस्कृत फोरम, उत्तर प्रदेश प्रांत रहे। मुख्य अतिथि प्रोफेसर सी उपेंद्र राव, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने आधुनिक संस्कृत रचनाधर्मिता एवं युगबोध पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता प्रो रमाकांत पांडेय, साहित्य विभागाध्यक्ष, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ने संस्कृत साहित्य के इतिहास पर अत्यंत सारगर्भित वक्तव्य दिया । सारस्वत अतिथि प्रो. शर्मिला सक्सेना, संकाय प्रमुख, ने संस्कृत विभाग को शुभकामनाएं दीं। धन्यवाद प्रो० उमारानी त्रिपाठी, अध्यक्ष, ग्लोबल संस्कृत फोरम एवं डॉ. रुबीना सक्सेना, ने दिया एवं संचालन डॉ. निशीथ गौड़ ने किया। इस अवसर पर संस्थान के कुलसचिव प्रो. आनंद मोहन, कोषाध्यक्ष श्रीमती स्नेह बिजलानी विभिन्न संकाय प्रमुख, विभागाध्यक्ष उपस्थित रहें। कुल शोध पत्र प्रस्तुति 34 रही एवं 500 से अधिक प्राध्यापकगण एवं शोध छात्र–छात्राओं ने प्रतिभागिता की। आयोजन समिति में समन्वयक प्रो अगम कुलश्रेष्ठ , संयोजिका डॉ. निशीथ गौड़ थीं।

आयुष में फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यशाला का आयोजन

आगरा स्थित सुप्रसिद्ध दयालबाग़ शिक्षण संस्थान की फैकल्टी ऑफ आयुष द्वारा पांच दिवसीय ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यशाला रिसर्च सपोर्ट सर्विस इन एकेडमिक इंस्टीट्यूशन का आयोजन संस्थान के निदेशक प्रोफेसर प्रेम कुमार कालड़ा के मार्गदर्शन में ऑनलाइन माध्यम से दिनांक 24 अगस्त से 28 अगस्त 2021 तक किया गया। इस कार्यशाला के दौरान देश के विभिन्न प्रसिद्ध संस्थानों से आमंत्रित प्रख्यात प्रोफेसर और लाइब्रेरियन प्रोफेसर रमेश गौड़ डीन, आई. जी. एन. सी. ए. मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर नई दिल्ली, डॉक्टर संजय कटारिया ,लाइब्रेरियन बी. आई. टी. एस. ओ. एम. मुंबई प्रोफेसर ए. पी. सिंह डायरेक्टर जर्नल नेशनल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया एंड आर. आर. एम. आर. एफ. कोलकाता, प्रोफेसर एम मधुसूदन डी. एल. आई. एस. यूनिवर्सिटी दिल्ली, प्रोफेसर पी.एम. नौशाद अली ए. एम. यू. अलीगढ़ ,डॉ आनंद कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर जे. जी. आर. एच. यू. चित्रकूट यूपी, प्रोफेसर प्रीतवंती सिंह डी.ई.आई, डॉ. रजनेश शर्मा डी.ई.आई और बीपी सिंह डी.ई.आई, आदि कई महत्वपूर्ण विषयों जैसे शोध प्रणाली, शोध प्रबंधन, एकेडमिक इंटीग्रिटी, साहित्य चोरी से बचाव के तरीके, शोध प्रकाशन और शोध डाटा प्रबंधन पर अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किया। इस ए. आई.सी टी ई अटल प्रायोजित कार्यशाला में देश के विभिन्न स्थानों हिस्सों से चयनित 200 प्रतिभागी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। यह कार्यक्रम 3 चरणों में पूरा हुआ। पहले चरण की शुरुआत प्रो.

डॉ. रमेश सी. गौर द्वारा हुई, जो कि वर्तमान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली ,संस्कृति मंत्रालय मे डीन , निदेशक और प्रमुख कलानिधि डिवीजन हैं। प्रो. गौर ने विशेष रूप से भारत में साहित्यिक चोरी पर अनुसंधान प्रकाशन नैतिकता के बारे में जागरुकता और प्रशिक्षण पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रो. गौर ने इस कार्यक्रम में अनुसंधान वकालत और एकेडमिक अखंडता को बढ़ावा देने और यू.जी.सी नियम 2018 के बारे में विस्तार से विवरण दिया। दूसरे चरण में डॉ. आनंद कुमार ने शैक्षणिक लेखन पर अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉक्टर आनंद कुमार जे. जी .आर. एच. यू .चित्रकूट उत्तर प्रदेश में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हैं। डॉ. आनंद ने अपने विचारों से प्रतिभागियों का ज्ञान वर्धन किया । तीसरे चरण की शुरुआत प्रोफेसर सुष्मिता चक्रवर्ती द्वारा हुई। प्रोफेसर सुष्मिता ने नई सूचना स्रोत तक पहुंच और खोज के बारे में विवरण दिया । उनके व्याख्यान ने प्रतिभागियों के ज्ञान को बढ़ाया।

स्वतंत्रता दिवस

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान में 75वां स्वतंत्रता दिवस कोविड–19 मानदंडों का पालन करते हुए उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर डी. ई. आई. के अध्यक्ष श्री जी एस सूद ने मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। डी. ई. आई. के विभिन्न संकायों, स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों द्वारा भव्य मार्च पास्ट किया गया। श्री सूद ने स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदानों के महत्व पर प्रकाश डाला और देश में मूल्य–आधारित शिक्षा के प्रचार में डी. ई. आई. द्वारा निभाई गई भूमिका की प्रशंसा की। डी. ई. आई. के निदेशक प्रो. पी.के. कालड़ा ने कला, सौंदर्य और रचनात्मकता (एबीसी) के रूप में डी. ई. आई. द्वारा की गई नई पहल का उल्लेख किया और इस बात पर जोर दिया कि हम सभी को अपनी मूल रचना को दुनिया के सामने लाने में सरल और रचनात्मक होना चाहिए। मार्च पास्ट की विजेता टीमों को विजेता ट्राफी प्रदान की गई। लड़कों में, टैक्निकल कॉलेज और डी. ई. आई. बैंड ने पुरस्कार जीता, जबकि लड़कियों में, डी. ई. आई. प्रेम विद्यालय को विजेता घोषित किया गया। डी. ई. आई. सरनाश्रम स्कूल के बच्चों को विशेष मार्च पास्ट पुरस्कार भी दिया गया। स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव के विजेताओं को विशेष पुरस्कार भी दिए गए। वे इस प्रकार हैं–

1. के. गुरुमहक, आरईआई 2. शब्द शर्मा, आरईआई 3. छवी सारस्वत, विज्ञान संकाय 4. गरिमा सिंह, डी. ई. आई. प्रेम विद्यालय 5. सूर्य यादव, शिक्षा संकाय 6. तमन्ना तोमर, आर.एस.ए.डब्ल्यू स्कूल7. खुशी कुमारी, प्रेम विद्यालय 8. अगम प्रीत, आर.ई.आई 9. अवधेश सिंह, शिक्षा संकाय 10. अगम सिंह, आर.ई.आई.।

डी. ई. आई. आगरा, एवं सी. यू. एच. महेंद्रगढ़ की आई. ई. ई. ई. छात्र शाखाओं एवं मैथवर्क्स के सहयोग से १० दिवसीय आई. ई. ई. ई. वर्कशॉप का आयोजन

आई. ई. ई. ई. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा की छात्र शाखा ने आई. ई. ई. ई. सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा महेंद्रगढ़ और मैथवर्क्स के सहयोग से, छात्रों के लिए उभरते अनुप्रयोगों के निमित्त मैटलैब के साथ मॉडलिंग और सिमुलेशन पर 10–दिवसीय आई. ई. ई. ई. कार्यशाला का आयोजन किया। व्याख्यानों की यह शृंखला 18 अक्टूबर 2021 को शुरू हुई और 28 अक्टूबर 2021 को समाप्त हुई।

कार्यशाला में मैटलैब के क्षेत्र में अग्रणी विशेषज्ञों द्वारा दी गई संवादात्मक व्याख्यानों की एक शृंखला शामिल थी। विशेषज्ञों के इस पैनल में विशेषज्ञ श्री मनोज कुमार जो कि डिजाइन टेक लिमिटेड में कार्यरत हैं, एवं डॉ. सौविक चटर्जी, जो मैथवर्क्स में शैक्षणिक भागीदार के पद पर कार्यरत हैं एवं उनकी सहयोगी श्रीमती आशिता गुप्ता, जो मैथवर्क्स में ग्राहक सहायता विशेषज्ञ के पद पर कार्यरत हैं।

कार्यशाला के दस दिनों में, विशेषज्ञों ने मैटलैब और सिमुलिंक ऑनरैंप, नियंत्रण उप–प्रणालियों की मूल बातें, भौतिक मॉडलिंग, नियंत्रण प्रणाली और सर्किट सिमुलेशन, सिमुलेशन ऑनरैंप, सिमस्केप ऑनरैंप जैसे विषयों का विवरण दिया। ए. आई, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग ऑन रैंप, और यहां तक कि प्रोजेक्ट–आधारित लर्निंग को संबोधित करते हुए, व्यापक और गहन प्रस्तुतियों, अत्याधुनिक तकनीकों के उदाहरणों और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों का विवरण भी दिया।

लाइव सत्रों के अलावा, भाग लेने वाले छात्रों को उनकी सीखने की प्रक्रिया में तेजी लाने और उनके कौशल को लागू करने में मदद करने के लिए मैथवर्क्स प्लेटफॉर्म पर विभिन्न ऑनलाइन पाठ्यक्रम मुफ्त में प्रदान किए गए। विशेष रूप से सभी छात्रों के लिए, गैर–आई. ई. ई. ई. सदस्यों के

लिए भी कार्यशाला मुफ्त थी, जिससे सभी पृष्ठभूमि के छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने का उचित अवसर मिलना संभव हो गया। दोनों विश्वविद्यालयों की इस अद्भुत पहल में प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम पूरा होने पर प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया।

यह 10–दिवसीय कार्यक्रम ऑनलाइन वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग मोड में किया गया था, जिससे छात्रों को चल रही महामारी के दौरान अपने समय का अधिकतम लाभ उठाने में मदद मिली। कार्यशाला में देश भर के छात्रों की भागीदारी देखी गई, जिन्होंने अपने बौद्धिक क्षितिज को व्यापक बनाने के लिए बहुत जोश और उत्साह के साथ भाग लिया और कार्यशाला का लाभ उठाया।

डॉ. राजीव कुमार चौहान, समन्वयक (प्रशिक्षण) और काउंसलर आई. ई. ई. ई. छात्र शाखा डी. ई. आई. आगरा ने बताया कि यह कार्यशाला छात्रों को हार्डवेयर के बिना परियोजना कार्य का विश्लेषण करने में मदद करेगी। अपनी परियोजनाओं के लिये योजना बनाने और उनकी वास्तविकता को समझने के लिये, इस कार्यशाला में छात्रों को मैटलैब सिम्युलेशन प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे वे बिना हार्डवेयर, धन, समय या किसी अन्य संसाधन की उपलब्धता के बारे में चिंतन करते हुए अनुसंधान में जुट जाएँ। यह अंतिम और तीसरे वर्ष के इंजीनियरिंग छात्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, जिन्हें काम करने वाले मॉडल और प्रोजेक्ट बनाने होते हैं, यहाँ तक की वैज्ञानिक पत्रिकाओं और प्रकाशनों में अपने शोध को प्रकाशित करना होता है। यह आयोजन एक समृद्ध अनुभव और एक बड़ी सफलता थी, जिसे प्रतिभागियों, विशेषज्ञों और संकाय सदस्यों से समान रूप से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। डॉ. कल्पना चौहान, समन्वयक (प्रशिक्षण) और काउंसलर आई. ई. ई. ई. छात्र शाखा सी. यू. एच. महेंद्रगढ़, ने बताया कि इस प्रयोगशाला में प्रतिभाओं को अब हार्डवेयर बनाने से पहले इस बात की जानकारी करने में मदद मिलेगी कि जो घटक या डिजाइन वो सोच रहे हैं वो सही फिट हो रहा है या नहीं। इस तरह से पैसे और समय की बचत होगी। अच्छे से अच्छे प्रोजेक्ट बनेंगे ।

प्रो. अजय कुमार सक्सेना, विभागाध्यक्ष, इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, डी. ई. आई. आगरा, एवं डॉ. राजेश कुमार दुबे, डीन, एस. ओ. ई. टी., सी. यू. एच. महेंद्रगढ़, ने आयोजन टीम को इस तरह की प्रयोगशालाओं को आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया और सफलता के लिए बधाई दी। इस प्रयोगशाला में आई. ई. ई. ई. छात्र शाखा में कार्यरत विद्यार्थी कुसुम सिंह, वागीश अमौरिया, श्रेया वर्मा, यशस्वनी सिंह ने प्रतिभागियों और आयोजकों के मध्य तालमेल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

सकाय समाचार

- फैकल्टी ऑफ एजुकेशन ने नॉलेज, अटेन्शन, रीटेन्शन एण्ड ट्रान्सफार्मेशन केंद्र (सी–कार्ट), स्कूल ऑफ एजुकेशन, के तहत अपने तीन प्रकाशनों के लिए डीईआई के नाम पर कॉपीराइट प्राप्त किया है–

1. एनोटेट वेबलोग्राफी– डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ. अंजना वर्मा, सुश्री निहारिका सुरेश
2. कक्षा के लिए आइस ब्रेकर क्रियाएं– प्रोफेसर नन्दिता सत्संगी, श्रीमती बीना राव, श्रीमती अभिलाषा सत्संगी
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों हेतु अष्ट–दिवसीय योग व ध्यान द्वारा तनाव मुक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम– श्री बजरंग भूषण, सुश्री शिखा सक्सैना

अन्य प्रकाशन–

1. स्कूल ऑफ एजुकेशन के प्रकाशन आई.एस. बी.एन. -978-93-92152-01-6 स्वरचित लघु गीतमाला प्रो. रवि भटनागर व डॉ. मनु शर्मा।
2. कला एकीकृत पाठ योजनाएं प्रो. रंजीत सत्संगी, प्रो. नंदिता सत्संगी, डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ. पारुल खन्ना, श्रीमती बीना राव, श्रीमती अभिलाषा सत्संगी, आई.एस.

बी.एन - 978-93-92152-02-3 ।

3. अष्ट योग एवं ध्यान द्वारा तनाव मुक्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम श्री बजरंग भूषण, सुश्री शिखा सक्सैना, श्रीमती बी. बीना राव, आई.एस.बी.एन -978-93-92152-07-8 ।

4. इवैल्यूएशन इन आर्ट इन्टीग्रेटिड लर्निंग प्रो. नंदिता सत्संगी, अभिलाषा वर्मा, बी. बीना राव, आई.एस.बी.एन -978-93-92152-08-5 ।

5. फन्डामैन्टल्स ऑफ ब्रेन बेस्ड लर्निंग डॉ. श्वेता अग्रवाल, आई.एस.बी.एन 978-93-92152-09-2 ।

6. हैन्डबुक ऑन इन्टिग्रेटिंग ड्रामा इन टीचिंग डॉ. सोना दीक्षित, आई.एस.बी.एन 978-93-92152-10-8 ।

7. ट्रेजर ट्रोव डॉ. अंजना वर्मा, श्रीमती अभिलाषा सत्संगी, आई.एस.बी.एन 978-93-92152-11-5 ।

8. टीचिंग लर्निंग मटीरियल (वेस्ट मटीरियल) डॉ. अंजना वर्मा, डॉ. प्रीति सैनी, लकी टोके, आई.एस.बी.एन 978-93-92152-12-2 ।

9. आर्ट इन्टीग्रेटिड रीसोर्स प्लान गाइड प्रो. रंजीत सत्संगी, प्रो. नंदिता सत्संगी, डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ. पारुल खन्ना, श्रीमती बीना राव, श्रीमती अभिलाषा सत्संगी, आई.एस.बी.एन 978-93-92152-13-9 ।

- डॉ. सोना आहूजा ने 18 जुलाई, 2021 को शिक्षा विभाग, शिक्षा और मनोविज्ञान संकाय, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा, गुजरात द्वारा आयोजित स्कॉलर मोज़ेक 2021 वार्षिक युवा शोधकर्ताओं की बैठक पर वेबिनार में 'अनुसंधान नैतिकता' पर व्याख्यान दिया। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय योगदिवस 20 जून, 2021 को देवा इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर चाइल्ड केयर द्वारा आयोजित 'योग पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार, में विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास और भलाई के लिए 'ध्यान' में सुरत–शब्द–योग ध्यान और कार्यकारी कार्यों पर ऑनलाइन सत्र के लिए मुख्य वक्ता के रूप में भी आमंत्रित किया गया। उन्हें 20 मई, 2021 को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन, गांधीनगर द्वारा आयोजित नैतिकताः पहचान, उल्लंघन, शिकायतें और अपील पर ऑनलाइन सत्र के लिए मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

- प्रो. एन. पी. एस. चंदेल को 13 जून, 2021 को जीएल, विश्वविद्यालय मथुरा द्वारा डीआरडीसी बैठक में सेमेस्टर/प्रगति प्रस्तुतियों के संचालन के लिए एक बाह्य विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने 05 अगस्त 2021 को पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स ,एंड टीचिंग के तहत अकादमिक स्टाफ कॉलेज एएमयू अलीगढ़, ,मंडी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पुनश्चर्या कार्यक्रम में सांख्यिकी पर व्याख्यान भी दिया।

- डॉ.सोना दीक्षित ने गुरु जंबेश्वर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा द्वारा आयोजित 'इनोवेटिव पेडागॉडीज,एंड रिसर्च मेथडोलॉजी' में ग्रेड 'ए' के साथ रिफ्रेशर कोर्स पूरा किया।

- हिंदी दिवस के अवसर पर अध्ययन एवं अनुसंधान पीठ भारत और हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस द्वारा अनुसंधान श्री सम्मान 2020, हिंदी विभाग की शोध छात्रा सदफ इश्त्याक को दिया गया । यह सम्मान शोध के क्षेत्र में मूल्यवान योगदान देने हेतु प्रदान किया गया। शोध छात्रा सदफ को यह सम्मान मिलना विभाग के लिए हर्ष का विषय है। इस सम्मान से पूर्व भी उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उनके इस सम्मान के लिए उनकी शोध निर्देशिका ने भी अनुशंसा की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी।

- प्रो. सोम प्रकाश के निर्देशन में जीवविज्ञान विभाग में पीएच.डी शोध कार्य कर रही सुश्री सैवी पनमकुट्टियिल मीनल ने साइंटिफिक रिपोर्ट्स जर्नल में एक मूल शोध लेख प्रकाशित किया है जो नेचर पब्लिशिंग ग्रुप (एनजीपी) के अंतर्गत आता है। लेख का शीर्षक है – 'एयू–पीडी बायमेटेलिक नैनोकणों का प्रयोगशाला विश्लेषण साइट्रस लिमोन लीफ एक्सट्रैक्ट के साथ संश्लेषित और मच्छरों के लार्वा और गैर–लक्षित जीवों पर इसकी प्रभावकारिता'। लेख को पूर्ण एसीपी छूट के साथ सुगम बनाया गया और प्रकाशित किया गया था।

सम्पादकीय मण्डल

संरक्षक : ● प्रो. पी.के. कालड़ा
परामर्शक : ● प्रो. जे.के. वर्मा
सम्पादक : ● डॉ. नमस्या
सहायक सम्पादक : ● डॉ. निशीथ गौड़
● डॉ. सूरज प्रकाश बड़त्या
सम्पादन सहयोग : ● डॉ. कविता रायजादा
● श्री अमित जौहरी

समाचार संयोजक :
● श्री अतुल सूरी
● डॉ. रचना गुप्ता
● डॉ. बीरपाल सिंह ठेनुआ
● श्री मनीष कुमार
● डॉ. सुमन शर्मा
● श्रीमती सीता पाठक
● डॉ. राजीव रंजन
● डॉ. आरती सिंह
● श्री राजीव सत्संगी